nwda.gov.in

सामूहिक हो प्रयास, तभी बुझेगी दिल्ली की प्यास

पांच दशक में पांच मीटर से गिरकर 60 मीटर तक पहुंचा भूजल का स्तर, इस अवधि में आबादी चार गुना से अधिक बढ़ी

स्वदेश कुमार ● जागरण

जल संरक्षण

किस्त-1

नई दिल्ली: ये दिल्ली है। देश की राजधानी। अगर सोचें तो लगता है कि यहां सुख-सुविधाओं की कोई कमी नहीं होगी। कम से कम बुनियादी सुविधाओं के बारे में तो ऐसी कल्पना कर ही सकते हैं, लेकिन ऐसा नहीं है। जीवन के लिए जरूरी पानी की किल्लत कई वर्षों से दिल्लीवालों को चिढ़ा रही है। यहां पैरों तले जमीन नहीं बल्कि पानी खिसक रहा है। जलस्रोतों को संरक्षित करने के बजाय हम लोग जल का दोहन कर रहे हैं। 50 साल पहले जिस दिल्ली में पांच से 10 मीटर पर पानी निकल आता था। आज कई स्थानों पर 80 मीटर नीचे तक भी पानी नहीं मिल रहा है। पिछले पांच दशक में जिस रफ्तार से दिल्ली की आबादी बढ़ी, उसी रफ्तार से भूजल स्तर भी गिरा, क्योंकि लोगों की जरूरतों को पूरा करने के लिए नए स्रोत नहीं बन पाए। इस दिल्ली को पानी की जरूरत 1,350 एमजीडी (मिलियन गैलन डेली) की है, लेकिन सभी स्रोतों को मिलाकर लगभग 1,000 एमजीडी पानी ही जुट पा रहा है। 350 एमजीडी पानी की आपूर्ति अवैध बोरवेल से हो रही है।

2000
से 2015 के बीच भूजल स्तर में औसत गिरावट दर एक से दो मीटर प्रति वर्ष रही

2020
से 2023 के बीच कुछ इलाकों में आधे से एक मीटर की मामूली वृद्धि देखी गई

चाणक्यपुरी के विवेकानंद कैंप में पानी के टैंकर से पानी भरते लोग ● जागरण आर्काइव

बढ़ती आबादी, गिरता भूजल स्तर

दशक	आबादी (लाख में)	भूजल स्तर (मीटर)
1970-80	36-60	5-10
1981-90	60-90	5-10
1991-2000	90-130	10-20
2001-2010	130-160	20-30
2011-2020	160-200	30-40
2021- अब तक	200 से अधिक	40-60

(नोट: आंकड़े अनुमानित हैं)

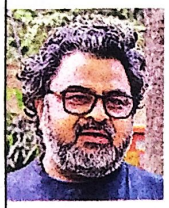

आंकड़ों से अलग देखें तो दिल्ली में भूजल स्तर कुछ इलाकों में 80 मीटर तक जा चुका है। कुछ स्थानों पर सकारात्मक संकेत मिले हैं, लेकिन समग्र दिल्ली के लिए यह संतोषजनक नहीं कहे जा सकते हैं। वर्षों की बूंदों को सहेजने के लिए संचयन संयंत्र स्थापित करने के साथ उनकी पूरी निगरानी की जरूरत है। पानी की बर्बादी रोकने के लिए भी सरकारी स्तर पर प्रयास किए जाने चाहिए।

-रमन कांत, अध्यक्ष, भारतीय नदी परिषद

जल संकट को दूर करने के लिए सभी को एकजुट होकर प्रयास करने की जरूरत है। दिल्ली जल बोर्ड की तरफ से जो पानी की आपूर्ति की जा रही है, उसका 80 प्रतिशत सीवरेज में जा रहा है। अगर इसे शोधित कर इसका फिर से इस्तेमाल किया जाए तो पानी की बचत हो सकती है। शोधित पानी का इस्तेमाल पार्क, दमकल वाहन, निर्माण कार्य और बाथरूम में फ्लश करने के लिए किया जा सकता है। इससे पानी की बचत होगी।

-डा. अनिल गुप्ता, सदस्य, केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड

दिल्ली पानी के लिए प्रकृति और दूसरे राज्यों पर निर्भर है। इसमें मुख्य रूप से वर्षा, यमुना नदी और भूजल से ही लोगों की जरूरतों को पूरा करना पड़ता है। इसके बावजूद इन 50 वर्षों में जल स्रोतों को विकसित करने पर कोई गंभीर प्रयास नहीं हुए। इसकी वजह से आज दिल्ली की प्यास पूरी नहीं हो पाती है। सेंट्रल ग्राउंड वाटर बोर्ड (सीजीडब्ल्यूबी) की रिपोर्ट के मुताबिक 1970- 80 के दौरान दिल्ली के कई क्षेत्रों में भूजल स्तर सतह से पांच से 10 मीटर नीचे था। उस समय यमुना के किनारों के अलावा दक्षिणी दिल्ली और मध्य दिल्ली में भी भूजल स्तर बेहतर था। आबादी भी तब 45 से 50 लाख के बीच थी। फिर धीरे-धीरे आबादी बढ़ती गई और वैसे ही भूजल का दोहन भी शुरू हो गया। 1981-1990 के दौरान भूजल स्तर में गिरावट की शुरुआत हो गई थी। तब तक आबादी भी 60 से 65 लाख के पार थी। शहरीकरण होने लगा था। भूजल का दोहन शुरू हो चुका था, लेकिन तब यमुना में पानी रहता था, जो हरियाणा से आता था।

1991 से 2000 के दौरान आबादी 94 लाख को पार कर गई। अवैध कालोनियां कटने लगीं, जहां पाइपलाइन से पानी नहीं था वहां धड़ाधड अवैध बोरवेल बनाए जाने लगे। 2001-2010 के दौरान भूजल का स्तर 30 मीटर से भी नीचे चला गया। दक्षिणी और पश्चिमी के साथ उत्तर-पश्चिमी दिल्ली में इसमें तेजी से गिरावट दर्ज की गई, लेकिन यमुना के किनारे होने के कारण मध्य दिल्ली, पूर्वी दिल्ली और उत्तरी दिल्ली की स्थिति संभली रही।

विकास कार्यों ने भी सोखा पानी: 2000 के बाद के वर्षों में दिल्ली में फ्लाईओवर व मेट्रो आदि का निर्माण भी तेजी से होने लगे। इनके पिलर जितना जमीन के ऊपर होते उतना ही नीचे भी जाते हैं। बाद में मेट्रो की सुरंग भी बनने लगी। जहां भी ये निर्माण कार्य होते हैं, वहां खोदाई के बाद पानी को सोखना पड़ता था। इसके बाद कंक्रीट की चादर बिछाई जाती थी। इसकी वजह से भी दिल्ली में भूजल का स्तर गिरा।

2011-2020 के दौरान भूजल स्तर दिल्ली में 30 से 40 मीटर और 2020 के बाद की अवधि में यह 60 मीटर तक पहुंच गया। कुछ स्थानों पर भूजल स्तर के 80 मीटर तक है। हालांकि इसके बाद जल संरक्षण को लेकर कुछ प्रयास शुरू हुए। इसमें वर्षा का पानी संरक्षित करने पर जोर दिया जाने लगा। इसकी वजह से कुछ स्थानों पर भूजल स्तर में एक मीटर तक वृद्धि भी दर्ज की गई।